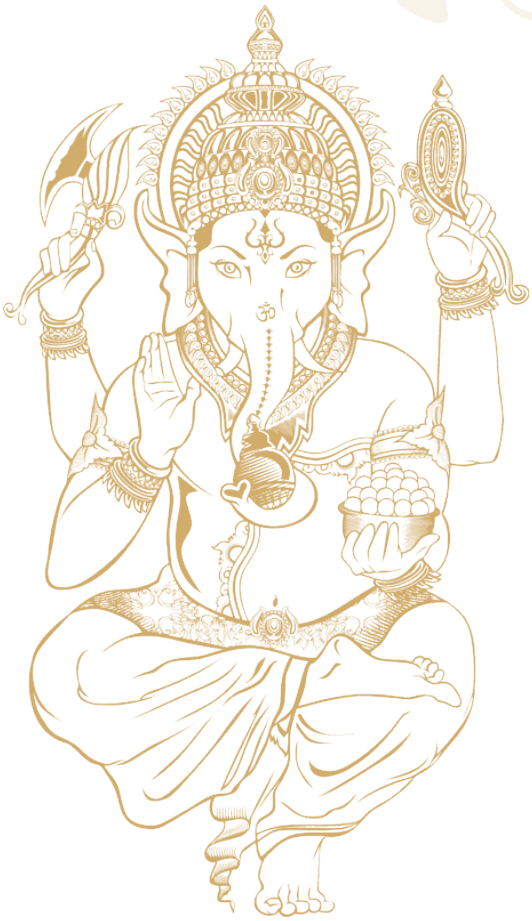

# Ashok munda

29 Jan 1987

04:30 PM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120814401

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग |
| **जन्म तिथि** | **29/01/1987** |
| दिन | गुरुवार |
| **जन्म समय** | **16:30:00 घंटे** |
| इष्ट | 24:58:45 घटी |
| **स्थान** | **Ranchi** |
| राज्य | Bihar |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 23:22:00 उत्तर |
| रेखांश | 85:20:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | 00:11:20 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 16:41:20 घंटे |
| वेलान्तर | -00:13:04 घंटे |
| साम्पातिक काल | 01:13:59 घंटे |
| सूर्योदय | 06:30:30 घंटे |
| सूर्यास्त | 17:33:08 घंटे |
| दिनमान | 11:02:38 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | शिशिर |
| सूर्य के अंश | 15:19:21 मकर |
| लग्न के अंश | 02:20:39 कर्क |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | कर्क - चन्द्र |
| **राशि-स्वामी** | **मकर - शनि** |
| **नक्षत्र-चरण** | **श्रवण - 2** |
| नक्षत्र स्वामी | चन्द्र |
| योग | सिद्धि |
| करण | नाग |
| गण | देव |
| योनि | वानर |
| नाड़ी | अन्त्य |
| वर्ण | वैश्य |
| वश्य | जलचर |
| वर्ग | मार्जार |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | भूमि |
| जन्म नामाक्षर | खू-खूबचन्द |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | ताम्र - ताम्र |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | कुम्भ |

# पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1908 | माघ | 9 |
| पंजाबी | संवत : 2043 | माघ | 16 |
| बंगाली | सन् : 1393 | माघ | 15 |
| तमिल | संवत : 2043 | थई | 16 |
| केरल | कोल्लम : 1162 | मकरम | 15 |
| नेपाली | संवत : 2043 | माघ | 16 |
| चैत्रादि | संवत : 2043 | माघ | कृष्ण 15 |
| कार्तिकादि | संवत : 2043 | पौष | कृष्ण 15 |

**पंचांग**

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 19:14:30
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 10:36:12 घंटे
जन्म योग _____: श्रवण
सूर्योदय कालीन योग ____: सिद्धि
योग समाप्ति काल _____: 22:54:27 घंटे
जन्म योग _____: सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण ____: चतुष्पाद
करण समाप्ति काल _____: 09:01:41 घंटे
जन्म करण _____: नाग
भयात _____: 14:44:29
भभोग _____: 53:07:53
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 7 वर्ष 2 मा 17 दि

**घात चक्र**

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: मंगलवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: कुम्भ
सूर्य _____: कुम्भ
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृष
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

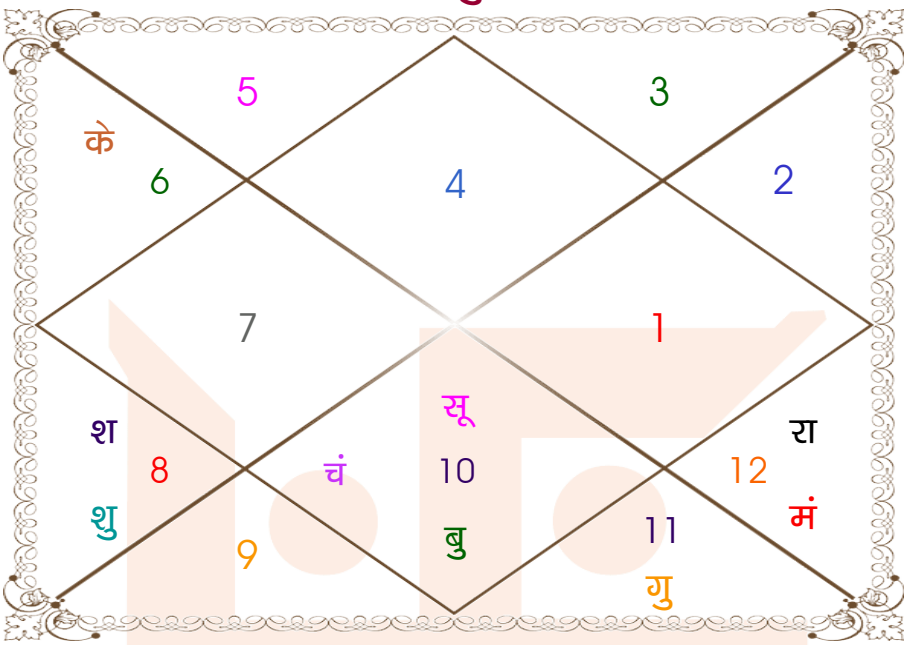


## चन्द्र कुंडली

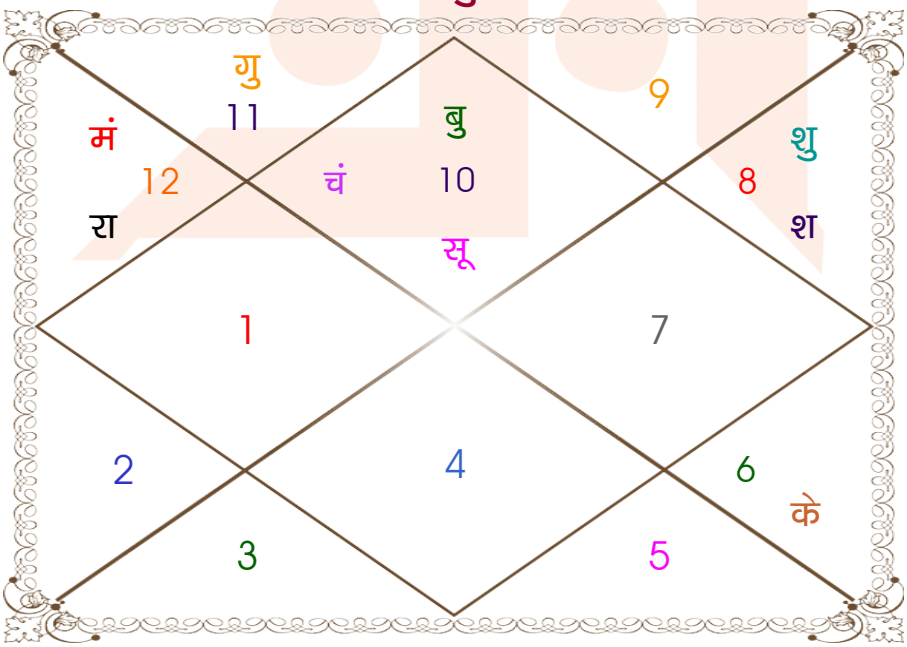

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

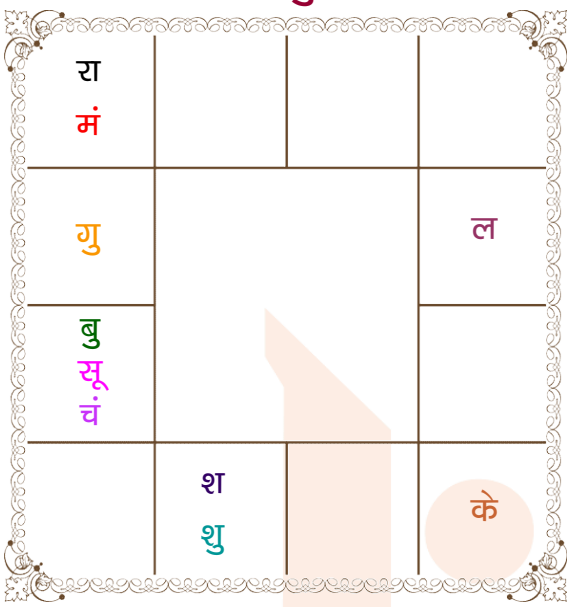


## लग्न कुंडली

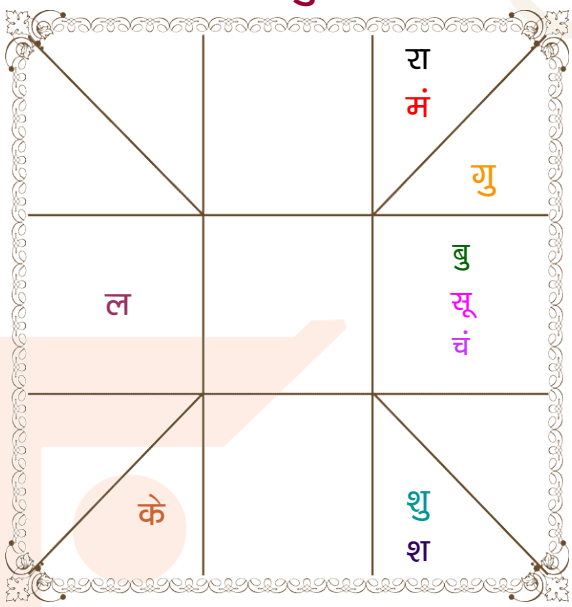


### विंशोत्तरी
### चन्द्र 7वर्ष 2मा 17दि

**चन्द्र**

**29/01/1987**

**18/04/2104**

| | |
|---|---|
| चन्द्र | 17/04/1994 |
| मंगल | 17/04/2001 |
| राहु | 17/04/2019 |
| गुरु | 17/04/2035 |
| शनि | 17/04/2054 |
| बुध | 17/04/2071 |
| केतु | 17/04/2078 |
| शुक्र | 17/04/2098 |
| सूर्य | 18/04/2104 |

### योगिनी
### मंगला 0वर्ष 8मा 19दि

**धान्या**

**19/10/2025**

**19/10/2028**

| | |
|---|---|
| धान्या | 18/01/2026 |
| भ्रामरी | 20/05/2026 |
| भद्रिका | 19/10/2026 |
| उल्का | 20/04/2027 |
| सिद्धा | 19/11/2027 |
| संकटा | 20/07/2028 |
| मंगला | 19/08/2028 |
| पिंगला | 19/10/2028 |

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | कर्क | 02:20:39 | 315:02:38 | पुनर्वसु | 4 | 7 | चंद्र | गुरु | राहु | --- |
| सूर्य | | | मक | 15:19:21 | 01:00:59 | श्रवण | 2 | 22 | शनि | चंद्र | गुरु | शत्रु राशि |
| चंद्र | | | मक | 13:42:53 | 15:06:00 | श्रवण | 2 | 22 | शनि | चंद्र | राहु | सम राशि |
| मंगल | | | मीन | 20:57:03 | 00:41:49 | रेवती | 2 | 27 | गुरु | बुध | शुक्र | मित्र राशि |
| बुध | | | मक | 26:47:50 | 01:43:41 | धनिष्ठा | 2 | 23 | शनि | मंगल | गुरु | सम राशि |
| गुरु | | | कुंभ | 29:05:03 | 00:12:26 | पू०भाद्रपद | 3 | 25 | शनि | गुरु | सूर्य | सम राशि |
| शुक्र | | | वृश्चि | 28:59:04 | 01:05:18 | ज्येष्ठा | 4 | 18 | मंगल | बुध | शनि | सम राशि |
| शनि | | | वृश्चि | 24:35:33 | 00:05:20 | ज्येष्ठा | 3 | 18 | मंगल | बुध | राहु | शत्रु राशि |
| राहु | व | | मीन | 20:02:31 | 00:09:52 | रेवती | 2 | 27 | गुरु | बुध | शुक्र | सम राशि |
| केतु | व | | कन्या | 20:02:31 | 00:09:52 | हस्त | 4 | 13 | बुध | चंद्र | केतु | शत्रु राशि |
| हर्ष | | | धनु | 01:28:04 | 00:02:53 | मूल | 1 | 19 | गुरु | केतु | शुक्र | --- |
| नेप | | | धनु | 13:02:18 | 00:02:00 | मूल | 4 | 19 | गुरु | केतु | बुध | --- |
| प्लूटो | | | तुला | 16:14:48 | 00:00:29 | स्वाति | 3 | 15 | शुक्र | राहु | शुक्र | --- |
| दशम भाव | | | मीन | 26:21:27 | -- | रेवती | -- | 27 | गुरु | बुध | गुरु | -- |

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

**चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:40:33

## लग्न-चलित

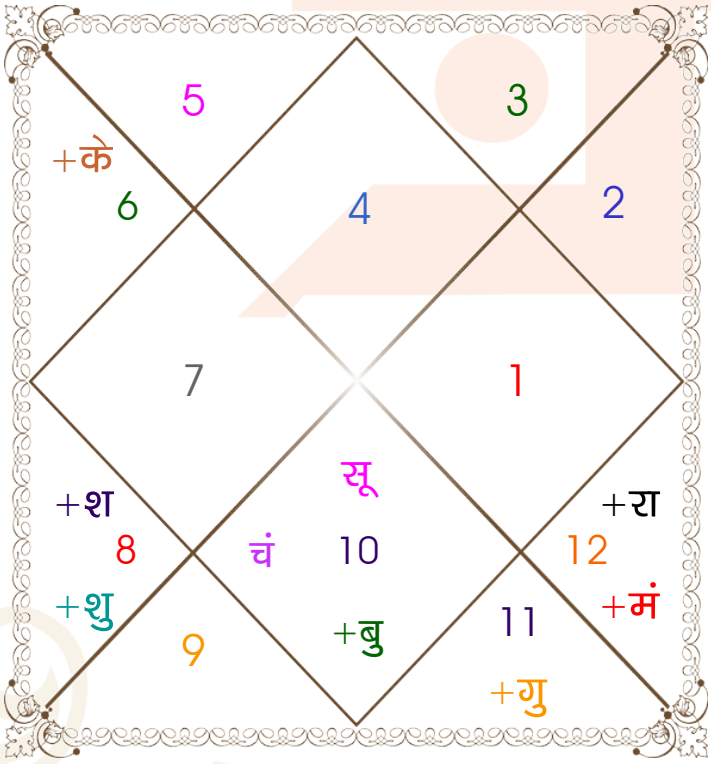


## चन्द्र कुंडली

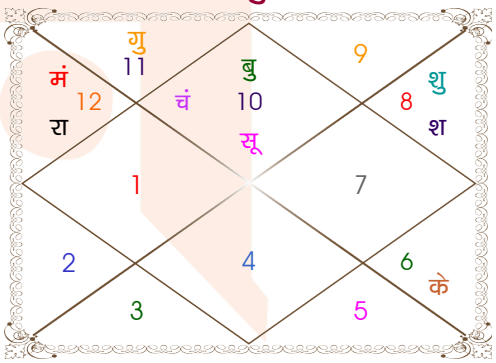


## नवमांश कुंडली

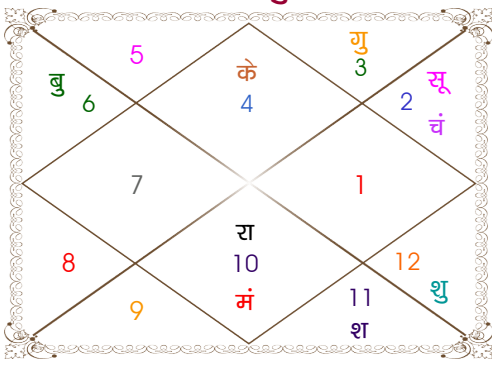



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन | 16:20:47 | कर्क | 02:20:39 |
| 2 | कर्क | 16:20:47 | सिंह | 00:20:55 |
| 3 | सिंह | 14:21:03 | सिंह | 28:21:11 |
| 4 | कन्या | 12:21:19 | कन्या | 26:21:27 |
| 5 | तुला | 12:21:19 | तुला | 28:21:11 |
| 6 | वृश्चिक | 14:21:03 | धनु | 00:20:55 |
| 7 | धनु | 16:20:47 | मकर | 02:20:39 |
| 8 | मकर | 16:20:47 | कुम्भ | 00:20:55 |
| 9 | कुम्भ | 14:21:03 | कुम्भ | 28:21:11 |
| 10 | मीन | 12:21:19 | मीन | 26:21:27 |
| 11 | मेष | 12:21:19 | मेष | 28:21:11 |
| 12 | वृष | 14:21:03 | मिथुन | 00:20:55 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | कर्क | 02:20:39 |
| 2 | कर्क | 26:45:08 |
| 3 | सिंह | 24:32:42 |
| 4 | कन्या | 26:21:27 |
| 5 | वृश्चिक | 00:00:27 |
| 6 | धनु | 02:21:15 |
| 7 | मकर | 02:20:39 |
| 8 | मकर | 26:45:08 |
| 9 | कुम्भ | 24:32:42 |
| 10 | मीन | 26:21:27 |
| 11 | वृष | 00:00:27 |
| 12 | मिथुन | 02:21:15 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका |
| रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी |
| हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा |

## चलित कुंडली

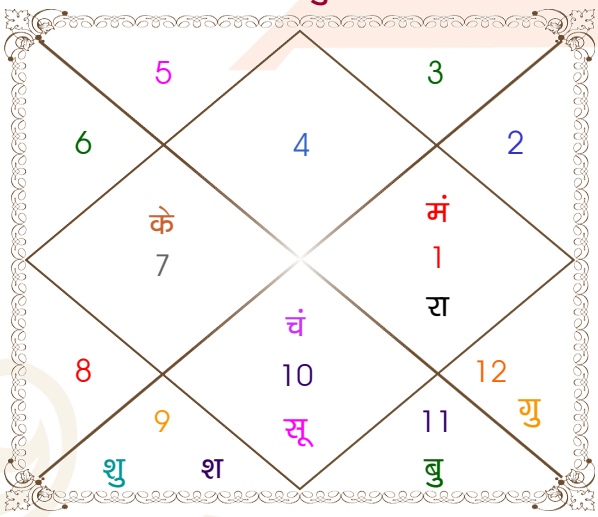


## भाव कुंडली

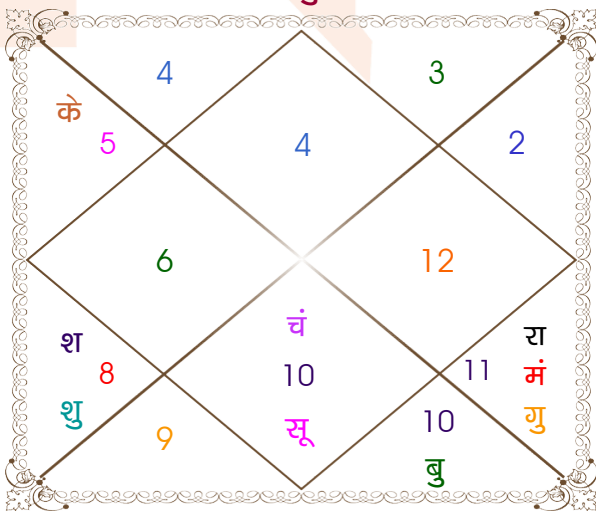



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**
लाइन तलाव रांची झारखंड
9835195382
9835195382

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : चन्द्र 7 वर्ष 2 मास 17 दिन

| चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29/01/1987 | | 17/04/1994 | | 17/04/2001 | | 17/04/2019 | | 17/04/2035 | |
| 17/04/1994 | | 17/04/2001 | | 17/04/2019 | | 17/04/2035 | | 17/04/2054 | |
| | 00/00/0000 | मंगल | 13/09/1994 | राहु | 29/12/2003 | गुरु | 05/06/2021 | शनि | 20/04/2038 |
| | 29/01/1987 | राहु | 02/10/1995 | गुरु | 24/05/2006 | शनि | 17/12/2023 | बुध | 28/12/2040 |
| राहु | 18/03/1987 | गुरु | 07/09/1996 | शनि | 30/03/2009 | बुध | 24/03/2026 | केतु | 06/02/2042 |
| गुरु | 17/07/1988 | शनि | 16/10/1997 | बुध | 17/10/2011 | केतु | 28/02/2027 | शुक्र | 08/04/2045 |
| शनि | 15/02/1990 | बुध | 14/10/1998 | केतु | 03/11/2012 | शुक्र | 29/10/2029 | सूर्य | 21/03/2046 |
| बुध | 18/07/1991 | केतु | 12/03/1999 | शुक्र | 04/11/2015 | सूर्य | 17/08/2030 | चंद्र | 20/10/2047 |
| केतु | 16/02/1992 | शुक्र | 11/05/2000 | सूर्य | 28/09/2016 | चंद्र | 17/12/2031 | मंगल | 28/11/2048 |
| शुक्र | 16/10/1993 | सूर्य | 16/09/2000 | चंद्र | 30/03/2018 | मंगल | 22/11/2032 | राहु | 05/10/2051 |
| सूर्य | 17/04/1994 | चंद्र | 17/04/2001 | मंगल | 17/04/2019 | राहु | 17/04/2035 | गुरु | 17/04/2054 |

| बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17/04/2054 | | 17/04/2071 | | 17/04/2078 | | 17/04/2098 | | 18/04/2104 | |
| 17/04/2071 | | 17/04/2078 | | 17/04/2098 | | 18/04/2104 | | 00/00/0000 | |
| बुध | 13/09/2056 | केतु | 13/09/2071 | शुक्र | 17/08/2081 | सूर्य | 05/08/2098 | चंद्र | 16/02/2105 |
| केतु | 10/09/2057 | शुक्र | 13/11/2072 | सूर्य | 17/08/2082 | चंद्र | 03/02/2099 | मंगल | 17/09/2105 |
| शुक्र | 11/07/2060 | सूर्य | 20/03/2073 | चंद्र | 17/04/2084 | मंगल | 11/06/2099 | राहु | 30/01/2107 |
| सूर्य | 17/05/2061 | चंद्र | 19/10/2073 | मंगल | 17/06/2085 | राहु | 06/05/2100 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 17/10/2062 | मंगल | 18/03/2074 | राहु | 16/06/2088 | गुरु | 22/02/2101 | | 00/00/0000 |
| मंगल | 14/10/2063 | राहु | 05/04/2075 | गुरु | 15/02/2091 | शनि | 04/02/2102 | | 00/00/0000 |
| राहु | 02/05/2066 | गुरु | 11/03/2076 | शनि | 17/04/2094 | बुध | 11/12/2102 | | 00/00/0000 |
| गुरु | 07/08/2068 | शनि | 20/04/2077 | बुध | 15/02/2097 | केतु | 18/04/2103 | | 00/00/0000 |
| शनि | 17/04/2071 | बुध | 17/04/2078 | केतु | 17/04/2098 | शुक्र | 18/04/2104 | | 00/00/0000 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 7 वर्ष 2 मा 21 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| गुरु - बुध | | गुरु - केतु | | गुरु - शुक्र | | गुरु - सूर्य | | गुरु - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17/12/2023 | | 24/03/2026 | | 28/02/2027 | | 29/10/2029 | | 17/08/2030 | |
| 24/03/2026 | | 28/02/2027 | | 29/10/2029 | | 17/08/2030 | | 17/12/2031 | |
| बुध | 12/04/2024 | केतु | 13/04/2026 | शुक्र | 09/08/2027 | सूर्य | 12/11/2029 | चंद्र | 26/09/2030 |
| केतु | 30/05/2024 | शुक्र | 08/06/2026 | सूर्य | 27/09/2027 | चंद्र | 07/12/2029 | मंगल | 25/10/2030 |
| शुक्र | 15/10/2024 | सूर्य | 25/06/2026 | चंद्र | 17/12/2027 | मंगल | 24/12/2029 | राहु | 06/01/2031 |
| सूर्य | 26/11/2024 | चंद्र | 24/07/2026 | मंगल | 12/02/2028 | राहु | 05/02/2030 | गुरु | 12/03/2031 |
| चंद्र | 03/02/2025 | मंगल | 13/08/2026 | राहु | 07/07/2028 | गुरु | 16/03/2030 | शनि | 28/05/2031 |
| मंगल | 23/03/2025 | राहु | 03/10/2026 | गुरु | 14/11/2028 | शनि | 02/05/2030 | बुध | 05/08/2031 |
| राहु | 25/07/2025 | गुरु | 17/11/2026 | शनि | 17/04/2029 | बुध | 12/06/2030 | केतु | 02/09/2031 |
| गुरु | 13/11/2025 | शनि | 10/01/2027 | बुध | 02/09/2029 | केतु | 29/06/2030 | शुक्र | 22/11/2031 |
| शनि | 24/03/2026 | बुध | 28/02/2027 | केतु | 29/10/2029 | शुक्र | 17/08/2030 | सूर्य | 17/12/2031 |

| गुरु - मंगल | | गुरु - राहु | | शनि - शनि | | शनि - बुध | | शनि - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17/12/2031 | | 22/11/2032 | | 17/04/2035 | | 20/04/2038 | | 28/12/2040 | |
| 22/11/2032 | | 17/04/2035 | | 20/04/2038 | | 28/12/2040 | | 06/02/2042 | |
| मंगल | 06/01/2032 | राहु | 02/04/2033 | शनि | 08/10/2035 | बुध | 06/09/2038 | केतु | 21/01/2041 |
| राहु | 26/02/2032 | गुरु | 28/07/2033 | बुध | 12/03/2036 | केतु | 03/11/2038 | शुक्र | 29/03/2041 |
| गुरु | 11/04/2032 | शनि | 14/12/2033 | केतु | 15/05/2036 | शुक्र | 16/04/2039 | सूर्य | 19/04/2041 |
| शनि | 04/06/2032 | बुध | 17/04/2034 | शुक्र | 14/11/2036 | सूर्य | 04/06/2039 | चंद्र | 22/05/2041 |
| बुध | 23/07/2032 | केतु | 07/06/2034 | सूर्य | 08/01/2037 | चंद्र | 25/08/2039 | मंगल | 15/06/2041 |
| केतु | 11/08/2032 | शुक्र | 31/10/2034 | चंद्र | 10/04/2037 | मंगल | 21/10/2039 | राहु | 15/08/2041 |
| शुक्र | 07/10/2032 | सूर्य | 14/12/2034 | मंगल | 13/06/2037 | राहु | 16/03/2040 | गुरु | 08/10/2041 |
| सूर्य | 24/10/2032 | चंद्र | 25/02/2035 | राहु | 25/11/2037 | गुरु | 26/07/2040 | शनि | 11/12/2041 |
| चंद्र | 22/11/2032 | मंगल | 17/04/2035 | गुरु | 20/04/2038 | शनि | 28/12/2040 | बुध | 06/02/2042 |

| शनि - शुक्र | | शनि - सूर्य | | शनि - चंद्र | | शनि - मंगल | | शनि - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06/02/2042 | | 08/04/2045 | | 21/03/2046 | | 20/10/2047 | | 28/11/2048 | |
| 08/04/2045 | | 21/03/2046 | | 20/10/2047 | | 28/11/2048 | | 05/10/2051 | |
| शुक्र | 18/08/2042 | सूर्य | 25/04/2045 | चंद्र | 08/05/2046 | मंगल | 13/11/2047 | राहु | 03/05/2049 |
| सूर्य | 15/10/2042 | चंद्र | 24/05/2045 | मंगल | 11/06/2046 | राहु | 12/01/2048 | गुरु | 19/09/2049 |
| चंद्र | 19/01/2043 | मंगल | 13/06/2045 | राहु | 05/09/2046 | गुरु | 06/03/2048 | शनि | 03/03/2050 |
| मंगल | 28/03/2043 | राहु | 04/08/2045 | गुरु | 21/11/2046 | शनि | 09/05/2048 | बुध | 28/07/2050 |
| राहु | 17/09/2043 | गुरु | 20/09/2045 | शनि | 21/02/2047 | बुध | 06/07/2048 | केतु | 27/09/2050 |
| गुरु | 18/02/2044 | शनि | 13/11/2045 | बुध | 14/05/2047 | केतु | 29/07/2048 | शुक्र | 19/03/2051 |
| शनि | 19/08/2044 | बुध | 02/01/2046 | केतु | 17/06/2047 | शुक्र | 05/10/2048 | सूर्य | 10/05/2051 |
| बुध | 30/01/2045 | केतु | 22/01/2046 | शुक्र | 21/09/2047 | सूर्य | 25/10/2048 | चंद्र | 05/08/2051 |
| केतु | 08/04/2045 | शुक्र | 21/03/2046 | सूर्य | 20/10/2047 | चंद्र | 28/11/2048 | मंगल | 05/10/2051 |

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 2 |
| भाग्यांक | 1 |
| मित्र अंक | 2, 7, 8, 1 |
| शत्रु अंक | 4, 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 20,29,38,47,56 |
| शुभ दिन | मंगल, सोम, गुरु |
| शुभ ग्रह | मंगल, चन्द्र, गुरु |
| मित्र राशि | कन्या, तुला |
| मित्र लग्न | तुला, मीन, वृष |
| अनुकूल देवता | नृसिंह |
| शुभ रत्न | मोती |
| शुभ उपरत्न | चन्द्रमणि |
| भाग्य रत्न | पुखराज |
| शुभ धातु | रजत |
| शुभ रंग | श्वेत |
| शुभ दिशा | पश्चिमोत्तर |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | शंख, कपूर, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न | चावल |
| दान द्रव्य | दही |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| मूंगा | मंगल | 100% | भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख |
| मोती | चंद्र | 88% | दम्पति, स्वास्थ्य |
| हीरा | शुक्र | 73% | सन्तति सुख, धनार्जन, सुख |
| माणिक्य | सूर्य | 59% | दम्पति, धन |
| लहसुनिया | केतु | 53% | पराक्रम, दम्पति |
| पुखराज | गुरु | 44% | दुर्घटना, शत्रु व रोग, नेष्ट भाग्य |
| गोमेद | राहु | 41% | नेष्ट भाग्य, दुर्घटना |
| नीलम | शनि | 12% | सन्तति कष्ट, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना |
| पन्ना | बुध | 0% | दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि |

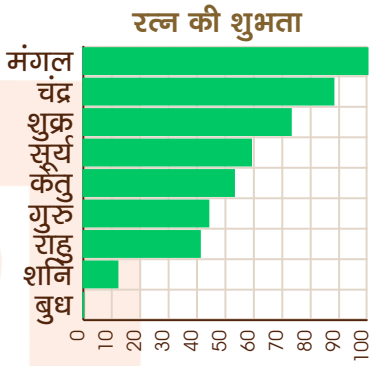


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चंद्र | 17/04/1994 | 66% | 100% | 100% | 12% | 44% | 73% | 12% | 16% | 31% |
| मंगल | 17/04/2001 | 66% | 94% | 100% | 0% | 53% | 73% | 12% | 16% | 59% |
| राहु | 17/04/2019 | 44% | 75% | 94% | 0% | 44% | 80% | 25% | 58% | 31% |
| गुरु | 17/04/2035 | 66% | 94% | 100% | 0% | 59% | 61% | 12% | 41% | 53% |
| शनि | 17/04/2054 | 44% | 75% | 94% | 12% | 44% | 80% | 38% | 52% | 31% |
| बुध | 17/04/2071 | 66% | 75% | 100% | 25% | 44% | 80% | 12% | 41% | 53% |
| केतु | 17/04/2078 | 44% | 75% | 100% | 0% | 44% | 80% | 0% | 16% | 66% |
| शुक्र | 17/04/2098 | 44% | 75% | 100% | 12% | 44% | 86% | 25% | 52% | 59% |
| सूर्य | 18/04/2104 | 72% | 94% | 100% | 0% | 53% | 61% | 0% | 16% | 31% |

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 17/12/1987-21/03/1990 | 20/06/1990-15/12/1990 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 21/03/1990-20/06/1990 | 15/12/1990-05/03/1993 | 15/10/1993-10/11/1993 |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 05/03/1993-15/10/1993 | 10/11/1993-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 | ---------- | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 01/11/2006-10/01/2007 | 16/07/2007-10/09/2009 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 26/01/2017-21/06/2017 | 26/10/2017-24/01/2020 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 27/08/2036-22/10/2038 | 05/04/2039-13/07/2039 | ---------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | ---------- | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 13/10/2065-03/02/2066 | 03/07/2066-30/08/2068 | ---------- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | शुभ | शत्रु व रोग |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | दम्पति |
| साढेसाती तृतीय ढैया | सम | दुर्घटना से बचाव |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | सम | व्यावसायिक परेशानी |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | अशुभ | धन |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

**********

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति है अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।

# कालसर्प योग

**अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।**
**योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।**

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

## काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के भाग्योदय होने में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित हो जाता है और नौकरी व्यवसाय में भी आंशिक रुकावटें आती हैं परन्तु कालान्तर में व्यवधान हट जाता है। परन्तु नौकरी होने पर अवनति का भय बना रहता है। जातक को आगे बढ़ने में व्यवधान तो आता है पर थोड़ा संघर्ष करने पर वह व्यवधान समाप्त हो जाता है। व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत व्यवधान आकर नुकसान को प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा छल कपट व्यवहार होने के कारण जातक को क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर थोड़ा बहुत कष्ट पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी बिमारियाँ घेर लेती है जिसमें थोड़ा अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है पर कालान्तर में वह सामान्य हो जाता है। जातक को शासन के तरफ से थोड़ा बहुत मुसीबतें आती हैं और अधिकारियों से कभी-कभी मतान्तर हो जाता है एवं न्यायालय से कभी दण्ड जुर्माना या आंशिक रूप से सजा मिल सकती है तथा समय-समय पर चिन्ता परेशानी लग जाती है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी कष्टमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक अनेक धन्धा करता है, पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए थोड़ा बहुत जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान व प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में शनि स्थित है एवं राहु से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

## चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

## बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

## शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्,

लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

## शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

## राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

## केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- गुरु
## ( 17/04/2019 - 17/04/2035 )

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 17/04/2019 को आरम्भ होकर 17/04/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु अष्टम् भाव में है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जो अष्टम में स्थित होकर द्वादश, द्वितीय तथा चतुर्थ भाव को देखता है तथा इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है।

स्वास्थ्य :

आप स्वस्थ और दीर्घायु होंगे। इस दशा काल में कोई बड़ी दुर्घटना होने की संभावना नहीं है तथा आप स्वस्थ और प्रसन्नचित होकर अपना कार्य पूरा करने के योग्य रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आप अपनी चल तथा अचल सम्पत्ति में बढ़ोत्तरी करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय में प्रसन्नतापूर्वक सुव्यवस्थित हो जाएंगे तथा नौकरी या व्यवसाय में आप पर्याप्त पैसा, जमीन, वाहन, अधिकार और पद प्राप्त करेंगे।

आप कभी-कभी कुछ गलत काम कर सकते हैं जिसके लिए दंडित भी हो सकते हैं तथा घाटा उठाना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

अष्टम भाव से गुरु की दृष्टि द्वादश अर्थात् शयन सुख के भाव के अतिरिक्त द्वितीय अर्थात् परिवार या कुटुम्ब भाव तथा चतुर्थ अर्थात् सुख भाव पर होने के फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन खुशहाल और सुख सम्पन्न होगा। आपके जीवन साथी परिवार का संचालन करने और शान्ति बनाए रखने में मार्गदर्शन करेंगे। आपके पिताजी को कभी कठिनाइयों से गुजरना पड़ सकता है तथा स्थान परिवर्तन के संकेत हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपका झुकाव शैक्षणिक गतिविधियों की तरफ होने से आप अपनी पढ़ाई जारी रखने की कोशिश करेंगे और सफल होंगे।

## अंर्तदशा :- गुरु - बुध
## ( 17/12/2023 - 24/03/2026 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 17/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 17/12/2023 को प्रारंभ होकर 24/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में सफलता मिलेगी। व्यापार और शेयरों में लाभ होगा। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार से विचार-विनिमय उत्तम होगा। टेलीविजन, लेखन आदि द्वारा विचार-विमर्श में भाग ले सकते हैं। कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनागम की संभावना है। विद्वानों की संगत में शामिल होंगे। ज्योतिष, धर्म, गणित और कविता में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सुख-साधनों से युक्त रहेंगे; ज्ञान-विज्ञान में रुचि लेंगे। आपके पिता के बहुत से मित्र होंगे; सम्मान, प्रसन्नता और समृद्धि की संभावना है। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश और शेयरों से लाभ, यात्रा, संचार माध्यम से लाभ, दर्शनशास्त्र से आय का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी; मानसिक क्रियाशीलता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं के सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

## अंर्तदशा :- गुरु - केतु
## ( 24/03/2026 - 28/02/2027 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 17/04/2019 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 24/03/2026 को प्रारंभ होकर 28/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि प्रखर है, सफलता प्राप्त करेंगे। आर्थिक प्रगति के लिए समय शुभ है। भाई-बहनों को छोटी-मोटी समस्या हो सकती है। आप समस्याओं का सामना साहसपूर्वक करेंगे। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। भाग्य साथ देगा।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध होंगे, यात्राएं होंगी, धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। आपके पिता के विरोधी हो सकते हैं; पिता सफल रहेंगे। माता के दान आदि पर खर्चे बढ़ सकते

हैं। आपके भाई-बहनों के लिए मन की शांति, आत्मविश्वास, निवेश से लाभ, शिक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे, उनका मुनाफा उत्तम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बाहों में कभी-कभी दर्द हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए श्वान को भोजन दें।

## अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
## ( 28/02/2027 - 29/10/2029 )

आपके लिए बृहस्पति महादशा 17/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 28/02/2027 को प्रारंभ होकर 29/10/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा; सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। सरकारी नौकरी या उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। प्रगति की ओर उन्मुख रहेंगे। प्रसन्नचित्त होंगे। मित्र सहायता करेंगे। प्रसिद्धि और धन की प्राप्ति होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से मधुर संबंध रहेंगे। मानसिक शांति और घरेलू सुख रहेंगे। धनागम होगा; समृद्ध बनेंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता धनी बनेंगे; लंबी यात्रा हो सकती है। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए आकांक्षाओं की पूर्ति, विवाह, साझेदारी में सफलता और व्यापार में लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, प्रभाव बढ़ेगा, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन हो सकता है; स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, समृद्धि बढ़ेगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे, उत्तम कर्मचारी मिलेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन करने से पहले गाय को रोटी दें।

## अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
## ( 29/10/2029 - 17/08/2030 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 17/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/10/2029 को प्रारंभ होकर 17/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इव अवधि में आपकी प्रोन्नति हो सकती है। सम्मान में वृद्धि होगी। आयु में बड़े लोग और उच्चाधिकारी आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। साझेदार से लाभ हो सकता है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। विरोधियों पर विजय होगी। जीवन में प्रगति होगी। सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता को सफलता मिलेगी; उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, दान धर्म, लंबी यात्रा, भाग्य में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन संपन्न होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन लाभ होगा; कार्यालय में वातावरण मित्रतापूर्ण होगा, सब कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होंगे। परामर्शदाताओं के सम्मान में वृद्धि होगी, धनागम होगा। व्यापारी सफल रहेंगे, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामूली पित्त संबंधी व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

## अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
## ( 17/08/2030 - 17/12/2031 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 17/04/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 17/08/2030 को आरंभ होकर 17/12/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। व्यापार में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। अत्यधिक भावुकता और खिन्नता से बचें। व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा। परिवार का पालन उत्तम करेंगे; माता से मधुर संबंध रहेंगे। बहुत से मित्र होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी का भाग्य उत्तम होगा, प्रसिद्ध होंगे। आपके पिता धनी बनेंगे,

बहुत से मित्र होंगे, संतान से सुख मिलेगा। माता का जीवन सुखमय होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे; समय का सदुपयोग करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं का धनार्जन उत्तम होगा, सफल रहेंगे। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए चावल, सफेद वस्त्र, मिश्री और सफेद चंदन का दान करें।